'मुगलकालीन चित्रकला में अकबर का योगदान'

डॉ. ममता रंजन*

मुगल कालीन चित्रकला का जन्म समरकन्द तथा हिरात में हुआ। 15वीं ई. में यह तैमूर वंश के संरक्षण में पली बढ़ी। तैमूर का पुत्र शाहरूख कवि था इसलिए उसने अपने दरबार में कवियों और चित्रकारों को दस्तक दी, जिसमें ''विहजाद'' सबसे उत्तम चित्रकार हुआ। यहाँ के उत्तराधिकारियों ने ईरानी शैली को अधिक उन्नति दी, जो 16वीं सदी में फारसी शैली में तब्दील हो गयी और ईरानियों के साथ भारत आ गई।[1]

ईरानी शैली में ''मानव या जीवधारियों'' को चित्रित करना धर्म निषेध था। इसमें ज्यामितिक तथा आलेखनों का अत्यधिक विकास हुआ, परन्तु धीरे–धीरे धार्मिक कट्टरता शिथिल पड़ गई। पशु–पक्षी, मानवाकृतियों एवं फूलपत्तियों का अंकन लोकप्रिय हो गया। भारत में अकबर से पूर्व जितने भी मुस्लिम शासक रहे। सभी ईरानी शैली पर आधारित चित्रांकन कराते रहे, परन्तु अकबर के शासनकाल में शिक्षा संस्कृति व कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ। अकबर की चित्रशाला में अधिकार ''हिन्दु कलाकार'' थे।[2] जिसमें ''सिलावट कायस्थ'' चितेरा–खाली'' व कायर जाति के थे। हम अकबर की कला का गुणत्व स्वभाव का पता हमें ''अबुल फज़ल'' की पुस्तक ''आइने अकबरी'' से मिलता है। अकबर से पहले कभी मुखाकृतियां नहीं बनाई जाती थी, परन्तु अकबर ने स्वयं अपनी मुखाकृति बनवाई और चित्रकारों से दरबारियों के चित्र बनवाता था। अकबर उच्चकोटि के चित्रों तथा कलाकृतियों को विशेष इनाम प्रदान करता था और रोजगार भत्ता भी बढ़ाता था। तथा मनसबदारी का औहदा दिया जाता था।[3]

अकबर के समय में चित्रकला कई रूपों में विकसित हुई शवीहों का अंकन हुआ, भित्ति चित्र बने, कागजी पुस्तक–चित्र या पोथी दृष्टान्त चित्र भी। प्राचीन साहित्य एवं कथायें पद आधारित अकबर कालीन चित्रकला को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

भारतीय साहित्य एवं कथानकों के चित्र –

1. हम्जनामा, तूतीनामा, शाहनामा, दीवान ए हाफिज, खम्सा–ए–निजामी तथा वहारिस्तान–ए–जामी उल्लेखनीय आदर्श कथानक हैं।
2. रामायण, महाभारत (रम्जनामा), नल दमयन्ती कथा, नैशध चरित्र, पंचतन्त्र (अय्यार–ए–दानिश एवं अनावार–ए–सुहैली), सूरसागर, हरिवंशपुराण आदि।

इन विषयों में सम्बन्धित सचित्र पोथियों की प्रतियों और कुछ खण्डित प्रतियां आज भी भारतीय तथा विदेशी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

---

* चित्रकला प्रवक्ता, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कालेज, मीरगंज, बरेली।

आईने अकबरी के अनुसार मुगल दरबार में भिन्न–भिन्न देशों एवं जातियों के चित्रकारों के आने का आलेख्य मिलता है। जैसे– कलमाक से ''फारूख'' और ''अब्दुल सम्मद'' तरवेज से ''मीरसयद अली'' कुछ ऐसे चित्रकार भी थे, जो ''विहजात'' नामक सर्वश्रेष्ठ चित्रकार से टक्कर ले सकते थे। जगन्नाथ, मुकुन्द, मधु, नन्दम्वालियरी, भीम, गजराती, धर्मदास, जगन, तारा, सावंत, खेमकरन, हरवंश, दसवन्त, वसावन, केशवलाल, महेश आदि थे।[4]

अकबर के समय में ग्रन्थों में ''दास्ताने अमीर हम्जा'' (हम्जनामा) बहुत महत्वपूर्ण है। इनके चित्रों को कपड़े पर आरोपित करके कागज पर बनाया गया है। दूसरा ग्रन्थ ''अकबरनामा'' जिसमें मुगल दरबारी जवीन की विविध झांकियाँ प्रस्तुत की गई हैं। इसी की एक प्रति में सर्वश्रेष्ठ चित्र ''सलीम के जन्म'' का है। तीसरा ग्रन्थ अनवार–ए–सुहैली (पंचतन्त्र का अनुवाद) जो लाहौर में चित्रित की गई। इस प्रति के 27 चित्र आज भी ''भारत कला भवन'' बनारस में सुरक्षित है। रम्जनामा, रामायण यह इसी ग्रन्थ में चित्रित किये गये। चौथा ग्रन्थ व्यक्ति चित्र है।[5]

दास्ताने अमीर हमजा में उस समय का चित्रांकन किया गया। जिस समय लोग हजरत साहब के विरोधी थे और बाद में उन्हीं के अनुयायी हो गये। इस ग्रन्थ में रूमानी बातों को भी दर्शाया गया। दास्ताने–अमीर हम्जा के चित्र 28 × 22 इंच के लम्बे व चौड़े पन्नों पर बने हैं जो कपड़े पर पतले कागज को चिपकाकर तैयार किये गये।[6] अकबर ने इस कथा को बारह खण्डों में विभाजित किया है अमीर हम्जा में फारसी प्रभाव दिखाई देता है। अमीर हम्जा में फारसी प्रभाव दिखाई देता है। इस ग्रन्थ के चित्र अलंकारिक नहीं है, बल्कि घटना चित्र है। मानव आकृति में स्फूर्ति दिखाई पड़ती है तथा नारी आकृतियां भारतीय हैं।

तूतीनामा

तूतीनामा अकबर कालीन ग्रन्थ में तोते का प्रेमालाप चित्रित किया गया है। तूतीनामा में 103 चित्र चित्रित हैं। इनके पत्रों का माप 24.4×16.3 सेमी. है। तूतीनामा के चित्र कुछ राजस्थानी शैली की याद दिलाते हैं।[7]

दिवान–ए–हाफिज

दिवाने–ए–हाफिज एक शेरो शायरी वाली पुस्तक है। जिसमें शेरों के द्वारा समस्याओं का हल निकाला जाता था, कोई भी समस्या हो, जिसमें आंख बंद कर शायरी पर हाथ रखा जाता था और उस शायरी में समस्या का हल निकल आता था।

रामायण

अकबर ने अब्दुल कादिर बदायूँनी को सन् 1585 ई. में रामायण को फारसी में अनुवाद करने का आदेश किया। आज जो जयपुर में संग्रहित है। इसके चित्रकार फाजिल, कमल, मोहन, बहार, नदीम, कादिर और कासिम आदि थे। पच्चीस हजार श्लोकों की यह

पुस्तक महाभारत से भी पुरानी है, इसमें राम का द्वार, सोने के मृग का पीछा करते हुए चित्र बहुत सुन्दर बना हुआ है। राक्षस और मारीच, सोने के हिरण का रूप धारण किये हुए हैं, रामचन्द्र जी पीछा कर रहे हैं।[8] इस चित्र में जंगल का चित्र है।

महाभारत (रम्जनामा)

महाभारत का अनुवाद अकबर कालीन प्रसिद्ध संस्कृत के विद्वान अब्दुलकादिर बदायूँनी ने ही किया। रम्जनामा अर्थात ''युद्ध की पुस्तक'' में जो चित्र बने हैं, उसमें युधिष्ठिर को दान देते हुए बनाया गया है। इस चित्र को जमशेद ने बनाया है।[9] कौरव व पाण्डवों के युद्ध को चित्रित किया गया है।

अनवार–ए–सुहैली (पंचतन्त्र)

पंचतन्त्र की इन कहानियों को पाँच भागों में संकलित किया गया तथा मित्र–भेद, मित्रसमर्पण को कोलूकीय, लब्ध, प्रणाशन और अपरीक्षित और अपरीक्षत कारक। पंचतन्त्र पर ही आधारित अयारदानिश और कलीलादमना।

अकबरनामा एवं आइने अकबरी

अबुल फजल ने दो जिल्दों में अकबरनामा और पाँच जिल्दों में आईने अकबरी लिखी है। इसमें अकबरकाल के पूर्वजों का वर्णन है, दूसरी जिल्द में अकबर का राज्यारोहण तीसरा भाग आईने अकबरी है। अकबरनामा में मुगल दरबारी चित्रों को दर्शाया गया हैं। चित्रों में दरबारी, सेना, शान शौकत, वैभव तथा भारत की अनेकों झांकियां भी बनवाई गई। साधु संत, कृषक, लोकजीवन से सम्बन्धित दृश्य संगीतज्ञों तथा राजारानी तथा दासियों का अंकन विशेष है। जिसमें 117 चित्र विक्टोरिया एण्ड मलवर्ट म्यूजियम लंदन में संग्रहित हैं। इस ग्रन्थ में सलीम के चित्र मुख्य हैं, इसमें मोर छत पर गर्दन फुलाये बैठा है, जिसमें हिन्दू के सभी लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मुसलमानों में कुत्ता हराम माना जाता है, परन्तु अकबरनामा में अकबर के पास कुत्ता बैठा चित्रित किया गया है।[10] इसी ग्रन्थ में शासनकाल की सामाजिक और धार्मिक दशा जानने का महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें प्रथम स्रोत में अकबर के परिवार, दरबार, राजकोष और प्रशासन का वर्णन है। दूसरे में राजकर्मी तथा अधिकारी तीसरे में न्याय, प्रशासनिक विभागों एवं भू राजस्व के नियम चौथे में अकबर कालीन सामाजिक दशा और पांचवें में सम्राट के विभिन्न विचारों एवं नैतिक कथनी का विवरण चित्रित किया और इसके चित्रकार अबुल फजल है।

बाबरनामा

बाबरनामा तुर्की भाषा में लिखी गई बाबर की आत्मकथा है, जिसको अकबर ने अब्दुर्रहीम से अनुवाद कराया, इस ग्रन्थ में बाबर ने अपने चरित्र को रोचक चित्रित किया है।

सामाजिक चित्र

अकबर ने समाज से सम्बन्धी चित्रों को बनवाया। जिसमें सामाजिक जीवन की झांकी, किसान, गरीब, उत्सव, खानपान, पहनावा, जल व्यवस्था, खेतीबाड़ी, रहन–सहन को विस्तार रूप से चित्रित कराया।[11]

शवीह चित्र

अकबर ने जहाँ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक ग्रन्थों को चित्रित कराया, वहीं उन्होंने व्यक्ति (शबीह) चित्र बनवाने में भी उत्साह दिखाया और उन्होंने स्वयं अपना ही शबीह बनवाया।

अकबर काल स्वर्णकाल कहलाता है। मुगल काल में कला सर्वोच्च स्थान पा चुकी थी, जो आज भी संग्रहालयों में संग्रहीत की हुई है। अकबर की चित्रकला में रंगों का वैविध्यपूर्ण प्रयोग हुआ है। इसमें मिश्रित रंगों का प्रयोग, उसें विभिन्न तानों में किया गया हैं इस समय की कला को वैभवशाली और विशुद्ध यथार्थवादी कहा जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ. सं. 130
2. सरजू प्रसाद अग्रवाल, अकबरी दरबार के हिन्दू कवि, पृ. सं. 14
3. वडेरिया तारकनाथ : भारतीय चित्रकला का इतिहास, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 83
4. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ. सं. 132
5. गैरोला वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, चित्र प्रकाशन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1963, पृ. सं. 181
6. भारतीय चित्रकला का इतिहास, भाग–2, मध्यकालीन, पृ. सं. 105
7. भारतीय चित्रकला का इतिहास, वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. सं. 46
8. आर. ए. अग्रवाल, कलाविलास, पृ. 129
9. भारतीय चित्रकला का इतिहास, डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल, पृ. सं. 111
10. असित कुमार हलधर, भारतीय चित्रकला, पृ. सं. 145
11. भारतीय चित्रकला का इतिहास, श्याम बिहारी अग्रवाल, पृ. 114